IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के गीतिका का विषय - वैविध्य

प्रियंका

शोध छात्र, हिंदी विभाग

श्री भगवान महावीर पीजी कॉलेज, पावानगर फाजिलनगर, कुशीनगर उत्तर प्रदेश

संबद्ध, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर,उत्तर प्रदेश, भारत

'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' आधुनिक काल के छायावादी कवियों में एक प्रमुख कवि और गीतकार के रूप में विद्यमान है। निराला को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि कविता और गीतों को लेकर मिली। चुँकि निराला नें गद्य साहित्य पर भी बहुत कार्य किया है, लेकिन इनके काव्य में एक मधुर स्वर झंलकृत होता है। जो लोगों को ज्यादा प्रभावित करता है। ऐसा ही इनका एक संग्रह '**गीतिका**' है। जो पूर्णतः गीतों पर आधारित है। इसके अलावा इन्होंने अन्य गीति संग्रहों के लिए भी गीत लिखे। जिसमें उनकी अनामिका, परिमल, अणिमा, बेला, अर्चना, आराधना, गीतगुंज आदि आते हैं । लेकिन गीतिका संग्रह की बात करे तो यह छायावादी गीतों की अमूल्य निधि है। यह एक ऐसा गीति संग्रह है जिसमें विभिन्न विषयों को लेकर के निराला अपने गीत एक जगह प्रस्तुत किये हैं । इस संग्रह के शुरुआत में ही प्रार्थनापरक गीत देखने को मिलता है। इसके अलावा प्रेम, प्रकृति और नारी सौन्दर्य, देशप्रेम तथा रहस्यपरक गीतों द्वारा इस संग्रह की विशिष्टता और बढ़ जाती है।

बीज- बिन्दु-: गीतिकाव्य, प्रेम, प्रकृति, नारी -सौंदर्य, प्रार्थना, देशप्रेम, रहस्यभावना।

मूल आलेख -:

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की '**गीतिका**' संग्रह 1936 ई0 में प्रकाशित 101 गीतों का संग्रह है। यह एक ऐसा गीति संग्रह है जिसमें विभिन्न विषयों को एक ही जगह गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसमें निराला ने प्रेम, प्रकृति ,प्रार्थना, राष्ट्रभक्ति, मातृभक्ति , रहस्यभावना, दार्शनिकता, नारी सौन्दर्य, आदि विषयों पर गीत लिखें है । इस सन्दर्भ में **डॉ० विश्वनाथ प्रसाद** कहते है कि " **गीतिका में 1929 से 1937 तक के लिखे 101 गीत संकलित है। इन गीतों का विषय, रहस्यानुभूति, प्रकृति सौन्दर्य सरस्वती अथवा मातृशक्ति की वन्दना, प्रेमानुभूति नारी सौन्दर्य, वैयक्तिकता, प्रपत्ति अथवा कवि की रचना प्रक्रिया है। रहस्य चेतना और सरस्वती या मातृशक्ति की वन्दना के गीत संख्या में सबसे अधिक है** "1

निराला ने विभिन्न विषयों के साथ सरस्वती वंदना पर ज्यादा गीत लिखे है । निराला ने इस गीति संग्रह की शुरुवात भी सरस्वती वंदना से ही की हैं।

"वर दे, वीणावादिनि वरदे!

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव

भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;

कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर

जगमग जग कर दे!"2

निराला इस गीत के माध्यम से न केवल सरस्वती वंदना करते हैं अपितु स्वतंत्र भारत के लिए प्रार्थना भी करते नजर आते हैं। यहाँ पर इनके राष्ट्रभक्ति का स्वर भी जाग्रत होता है।जिसमें निराला भारत के स्वतंत्रता की कामना करते है- 'प्रिय स्वतंत्र-रव /अमृत-मंत्र नव /भारत में भर दे!' । इस संग्रह में इनका एक और गीत है जो राष्ट्रगीत के लिए प्रसिद्ध हैं -

"भारति, जय, विजयकरे!

कनक-शस्य-कमलधरे!

लंका पदतल शतदल

गर्जितोर्मि सागर-जल,

धोता शुचि चरण युगल

स्तव कर बहु-अर्थ-भरे।"3

ऐसा माना जाता हैं कि गीतिकाव्य के लिए आत्मानुभूति का विशेष महत्त्व है अर्थात् 'आत्मपरकता' गीतिकाव्य का प्रमुख तत्व हैं। निराला के अनेक गीत इसी प्रकार के हैं।

गीतिका संग्रह में निराला स्वयं कहते हैं कि ' **रंगगयी पग - पग धन्य धरा, हुई जग जगमग मनोहरा।**' अर्थात् निराला को संगीत की प्रेरणा उन्हें अपनी पत्नी 'मनोहरा' से प्राप्त हुई। गीतिका संग्रह को उन्होंने अपनी पत्नी मनोहरा को ही समर्पित किया हैं। ध्यान देने वाली बात यह हैं कि निराला को संगीत और साहित्य के निकट लाने का श्रेय भी उनकी पत्नी मनोहरा को जाता हैं। इस संदर्भ में **डॉ0 सूर्यप्रसाद दीक्षित** कहते हैं कि -" **खड़ी बोली का प्रारम्भिक ज्ञान और उसके साथ संगीत का शौक निराला को अपनी पत्नी मनोहरा देवी से ही प्राप्त हुआ था। श्रीमती मनोहरा देवी अपने पति सुर्जकुमार को आदर्श पुरुष बनाने के लिए सदैव कृत संकल्प रहीं। सुर्जकुमार जब भी अपनी ससुराल डलमऊ में रहते थे, वे निरन्तर उन पर सतर्क निगाह रखती थी। मनोहरा देवी को सुर्जकुमार का दार्शनिक स्वभाव प्रिय था। वे अपनी चिन्ता किये बिना पति को सौंदर्य, संगीत तथा साहित्य की ओर प्रेरित करती रहती थीं। "** 4

इसी के परिणाम स्वरूप निराला नें प्रेम सौंदर्य के गीत भी अधिक मात्रा में लिखे। गीतिका संग्रह में ऐसे प्रेमपरक गीतों की संख्या भी कम नहीं हैं। इनका एक गीत जिसमें यह प्रेम अज्ञात प्रिय के प्रति भी दिखता हैं -

"नयनों में हेर प्रिये,

मुझे तुमने ये वचन दीये -

तुम्ही हृदय के सिंहासन के

महाराज हो, तन के, मन के,

मेरे मरण और जीवन के

कारण - जाम पीये

मेरी वीणा के तारों में

बँधे हुए

ज्योति अपार लिए। "5

इसके साथ ही इनका एक और गीत ' **कब से मैं पथ देख रही, प्रिय उर न तुम्हारे रेख रही प्रिय**' प्रेमपरक गीत की ही श्रेणी में आता हैं। इस संग्रह में निराला का प्रेम अलग - अलग रूपों में दिखाई देता हैं। कभी इनका प्रेम प्रकृति के प्रति दिखायी देता हैं तो कभी नारी के प्रति और कहीं - कहीं तो इनके गीतों में नारी और प्रकृति एक साथ उपस्थित होकर अपने अर्थ की शोभा बड़ा देते हैं। '**जूही की कली** ' ऐसा ही गीत हैं। लेकिन गीतिका में ऐसा दृश्य भी कम नहीं हैं। इनका एक गीत इस प्रकार हैं -

"(प्रिय) यामिनी जागी।

अलस पंकज-दृग अरुण-मुख—

तरुण-अनुरागी।

खुले केश अशेष शोभा भर रहे,

पृष्ठ-ग्रीवा-बाहु-उर पर तर रहे;

बादलों में घिर अपर दिनकर रहे,

ज्योति की तन्वी, तड़ित—

द्युति ने क्षमा माँगी। "6

इस संग्रह में इनके कुछ गीत श्रृंगारिक, प्रेम सौंदर्य के भी हैं। जिसमें '**स्पर्श से लाज लगी** ','**नयनों के डोरे लाल गुलाल - भरे, खेली होली!** ' प्रमुख हैं।निराला के इस प्रकार के गीत इन्हें विद्यापति की श्रेणी में खड़ा कर देता है। इस संदर्भ में **डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद** कहते है कि - "**छायावाद के कवियों से अलग होकर निराला नें नारी के सौंदर्य और प्रेम का चित्रण किया है। प्रसाद के काव्य में नारी के सौंदर्य में उसके अंग नहीं खुलते हैं। वे नारी के कामोत्तेजक अंगों का नाम लेने से बचते है। पंत के यहाँ भी नारी केवल सौंदर्य की आभा मात्र है। निराला ने सुपूर्णखा के सौंदर्य वर्णन में नारी के सौंदर्य का उत्तेजक वर्णन किया है।'गीतिका' के एक गीत में भी उनकी नायिका अपने प्रिय के साथ रात मे जागती है।**"7

इसके आगे भी डॉ0 विश्वनाथ कहते हैं कि - "**नारी के सौंदर्य और प्रिय से उसके मिलन का यह उत्तेजक वर्णन छायावादी चेतना के विपरीत है विद्यापति के गीतों में ऐसा चित्र दिखाई देता है।**"8 लेकिन निराला के सभी प्रेम सौंदर्य के गीत ऐसे नहीं हैं। जैसे -' '**मेरे प्राणों में आओ**', '**तुम गाती हो अपना गान** ', '**मार दी तुझे पिचकारी**', **नयनों का नयनों से बन्धन** '**तुम्हें ही चाहा सौ - सौ बार**' आदि प्रेम से सम्बंधित कुछ अच्छे गीत भी इस संग्रह में हैं।इस संदर्भ में **नंददुलारे वाजपेयी** कहते हैं कि-" **सबसे अधिक संख्या में निराला ने गीत लिखे हैं और उनमें छंदो, रागों, कल्पना चित्रों, रसों का बड़ा वैविध्य हैं। इनके कुछ गीत तो विशुद्ध श्रृंगारिक हैं, 'परिमल ' और 'गीतिका ' श्रृंगार रस के गीत हैं - मानवीय और प्राकृतिक वर्णनों में प्रकृति की मानवानुरुपता की प्रवृत्ति दिखाई देती है।** "9

निराला ने कहीं -कहीं इसमें प्रकृति का बहुत सुन्दर मानवीकरण रूप उपस्थित किया हैं। जो लोगों को प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

"मेघ के घन केश,

निरुपमे, नव वेश।-

चकित चपला के नयन नव,

देखती हो भू शयन तव,

मन्द - लहरा -पट -पवन, रव

छा रहा देश।"10

इसके साथ ही ऋतु सम्बन्धित गीतों की भी विविधता दिखाई देती हैं। जैसे वर्षा ऋतु, वसन्त ऋतु आदि। **वसंत ऋतु** का गीत इस प्रकार है-

"सखि, वसंत आया।

भरा हर्ष वन के मन,

नवोत्कर्ष छाया।

किसलय-वसना नव-वय-लतिका

मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,

मधुप-वृंद बंदी—

पिक-स्वर नभ सरसाया।"11

वसंत ऋतु निराला का सबसे प्रिय ऋतु है। इसीलिए इन्होंने अपने अनेक संग्रह में वसंत से सम्बन्धित गीत ज्यादा लिखे हैं।इस संग्रह में भी वसंत ऋतु के गीतों की संख्या अधिक हैं साथ ही वर्षा से संबन्धित गीत भी अधिक मात्रा मिल जाते है।

इस संग्रह में दार्शनिक गीत भी प्रचुर मात्रा में देखने को मिलते हैं। जिसमें निराला अज्ञात प्रिय को सम्बोधित करते हुए कहते है। कि -

"कौन तम के पार?—)रे, कह)

अखिल-पल के स्रोत, जल-जग,

गगन घन-घन-धार-(रे, कह)

गंध-व्याकुल-कूल-उर-सर,

लहर-कच कर कमल-मुख-पर

हर्ष-अलि हर स्पर्श-शर, सर,

गूँज बारंबार!—)रे, कह)"12

निराला के छायावादी गीतों में अनामिका और परिमल के गीतों के अलावा केवल हम गीतिका के गीतों की बात करें तो यह गीतिकाव्य अनेक विशेषताओं का भंडार है। जो इनकी ' बहुमखी प्रतिभा ' का परिचय देती है। इस सम्बन्ध में **आचार्य नंदकिशोर वाजपेयी** का कहना है कि **"गीतिका में सामान्यतः गीतिकाव्य की संगीतात्मकता, रागात्मकता, भावों की एकता, अंतः प्रेरणा, अपेक्षाकृत संक्षिप्तता एवं कला की पूर्णता जैसी विशेषताएँ दिखायी हैं। उनके अनुसार गीतिका में निराला की बहुमुखी काव्य प्रतिभा के दर्शन होते हैं।"13** यही नहीं इस संग्रह की भूमिका में **'जयशंकर प्रसाद'** कहते हैं कि गीतिका संग्रह हिन्दी साहित्य के लिए अनमोल उपहार हैं और निराला के संबंध में कहते हैं कि -" **निराला जी, हिन्दी - कविता की नवीन धारा के कवि हैं, और साथ ही भारती - मन्दिर के गायक भी हैं। उनमें केवल पिक की पंचम पुकार ही नहीं ; कनेरी की - सी एक ही मीठी तान नहीं ; अपितु उनकी गीतिका में सब स्वरों का समारोह है। उनकी स्वर - साधना हृदय के ग्रामों को झंकृत कर सकती है कि नहीं, यह तो कवि के स्वरों के साथ तन्मय होने पर ही जाता जा सकता है। "14**

इस संग्रह में विभिन्न स्वरों का समन्वय भी दिखायी देता हैं। जो छायावाद की शोभा को और बढ़ा देता है।

निष्कर्ष : - इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गीतिका संग्रह गीतों से भरा गुलदस्ता हैं। जिसमें तरह- तरह के सुगंधित व सुन्दर फूल दिखाई देते हैं। ये फूल प्रेम के, प्रकृति के, नारी के, आध्यात्म के, मातृशक्ति के, तथा देशप्रेम आदि के विभिन्न फूल हैं। गीतिका के सम्बन्ध में **डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित** कहते हैं कि -**"गीतिका का यह गीत जन जन का कंठहार बन चुका हैं। गीतिका में कई गीत ऐसे हैं जो हिन्दी गीतिकाव्य की विशिष्ट उपलब्धि है। निराला के गीतों में नये विचारों और नई भावनाओं को अभिव्यक्ति मिली है। कभी - कभी वे मानवीय आत्मा की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति मिली है। कभी - कभी वे मानवीय आत्मा की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करते हैं और साथ - साथ सामाजिक जीवन के परिवर्तनों को भी। जैसे, उदाहरण के रूप में पेड़ों की सूखी टहनियाँ बसन्त की प्रत्याशा में विह्वल हैं। उसकी गर्मी, प्रकाश और प्राणशायी नमी पाने के लिए सभी व्याकुल हैं। गीत की पंक्ति है- "रूखी री यह डाल, बसन बासन्ती लेगी।" अस्तु; 'गीतिका ' का वैशिष्ट्य आज प्रायः सर्वस्वीकार्य है। "15**छायावाद कि शोभा बढ़ाने में 'गीतिका' का भी विशेष योगदान है।

संदर्भ ग्रंन्थ सूची

1- डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद , आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य ,विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी,2011, पृष्ठ संख्या -26
2- श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला , गीतिका, भारती -भण्डार लीडर प्रेस, द्वितीय संस्करण , इलाहाबाद, 2002,पृष्ठ संख्या -1
3- वही,पृष्ठ संख्या -68
4- डॉ0 सूर्यप्रसाद दीक्षित, निराला समग्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2018 , पृष्ठ संख्या -3
5- श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला , गीतिका, भारती -भण्डार लीडर प्रेस, द्वितीय संस्करण , इलाहाबाद, 2002, पृष्ठ संख्या -29
6-वही,पृष्ठ संख्या-4
7- डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद ,आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य , विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी, 2011, पृष्ठ संख्या-28
8-वही,पृष्ठ संख्या - 28
9- नंददुलारे बाजपेयी, कवि निराला , लोकभारती प्रकाशन , 2020, पृष्ठ संख्या - 47
10-श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला , गीतिका, भारती -भण्डार लीडर प्रेस, द्वितीय संस्करण , इलाहाबाद, 2002,पृष्ठ संख्या -45
11- वही, पृष्ठ संख्या -5
12-वही,पृष्ठ संख्या-14
13-डॉ0 सूर्यप्रसाद दीक्षित, निराल समग्र उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृष्ठ संख्या -15
14-श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला , गीतिका, भारती -भण्डार लीडर प्रेस, द्वितीय संस्करण , इलाहाबाद, 2002, पृष्ठ संख्या -1
15- डॉ0 सूर्यप्रसाद दीक्षित, निराल समग्र उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, ,पृष्ठ संख्या -16